B.Ed Ist year — 6 May 2020, Wednesday

Sub- Teaching of Hindi

Topic- Micro-Teaching

सूक्ष्मशिक्षण

सूक्ष्मशिक्षण शिक्षा के क्षेत्र में एक नया प्रयोग है। इस विधि का विकास स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के एक शोध छात्र 'कीथ' ने 1961 में किया था। उसने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को 5-5 छात्रों की छोटी-2 कक्षाओं में 10-10 मिनट शिक्षण करने का अवसर प्रदान किया। और उन्हें यह आदेश दिया कि इन दस मिनट में वे ऐसा कार्य करें, जिसमें किसी एक शिक्षण कौशल का प्रयोग करना पड़े।

अमेरिका के प्रोफेसर एलेन ने इस उपागम को सूक्ष्म शिक्षण (micro-teaching) का नाम दिया। इसने धीरे-2 शिक्षा के क्षेत्र में 'एक आन्दोलन का रूप धारण' कर लिया। 'अमेरिका से यह आन्दोलन' 'रूस' पहुँचा।

सूक्ष्म शिक्षण के पद

1. शिक्षण कौशल को निश्चित करना।
2. सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक ज्ञान।
3. पाठ्य-सामग्री का चयन और पाठ योजना निर्माण।
4. पाठ अवलोकन एवं समालोचना।
5. पुनर्बलन।
6. पुनर्योजना।
7. पुनः शिक्षण एवं प्रतिपुष्टि।
8. प्रतिपुष्टि एवं पुनर्बलन।

सूक्ष्म शिक्षण के गुण-दोष

गुण

1. उपचारात्मक विधि।
2. स्वयं सीखने की विधि।
3. सुधार का प्रयत्न।
4. पुनर्बलन और प्रतिपुष्टि।
5. शिक्षण-कौशलों का प्रशिक्षण।

दोष

1. कक्षा का आकार अपेक्षाकृत कम।
2. अवास्तविक परिस्थिति में वास्तविक अधिगम असम्भव।
3. बहुत अधिक समय की आवश्यकता।
4. अधिक धन, समय व शक्ति की आवश्यकता।

सूक्ष्म-शिक्षण हेतु पाठ योजना निर्माण

पाठ शिक्षण का उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन करना। परन्तु सूक्ष्म शिक्षण का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन (शिक्षण कौशलों का विकास) करना है।

B.R.C. Deoband
Asst. Pro Sapna Tyagi